कृषि उपयोगी पुस्तकमाला—संख्या २

लाख की खेती

लेखक—

गयादत्त त्रिपाठी बी० ए०

मूल्य चार आना

कृषि उपयोगी पुस्तक माला संख्या २

लाख की खेती

—:o:—

लेखक

पं० गयादत्त त्रिपाठी बी. ए.

कृष्ण कान्त त्रिपाठी

कार्य्याध्यक्ष कृषिभवन, इलाहाबाद

—:o:—

पं० काशीनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से विजय प्रेस प्रयाग मे छपी

दूसरी बार ५०० सन् १९२८ मूल्य चार आना

खाद और उनका व्यवहार

लेखक पं० गयादत्त त्रिपाठी, बी० ए०

सम्मतियां

सरस्वती—"आकार छोटा पृष्ठ संख्या ५४ छपाई और काग़ज़ अच्छा मूल्य ।)........इसमें क्या है यह बात इसके नाम ही से प्रकट है । । जमींदारों और काश्तकारों के यह बड़े ही काम की है—इसके द्वारा अनेक प्रकार के खादों के गुण और उनके बनाये जाने की विधि जानकर बहुत कुछ लाभ उठाया जा सकता है ।"

क्षत्रियमित्र—"जमींदारों एवं कृषिकों के अवश्य देखने योग्य है । इसमें हर किस्म की खादों का लाभा लाभ और उनका व्यवहार बड़े अच्छे ढंग से बताया गया है और पुस्तक के अन्त में जोताई व बीज सम्बन्धी पुरानी कहावतें भी दी गई हैं ।"

Modern Review- "This is a cemprehensive and useful publication on the subject of manures. We have nothing but praise for the scientific manaer in which the subject has been treated and for the way in which every thing has been clearly elucidated. The information conveyed through the book will be of much practical use... Eighty different forms of manures have beeu discussed in brief The proverbs on the subject that have been given are also appropriate."

The Leader. "The author of this book has very judiciously dealt with only such manures as are generally used by Indian agriculturists and such as they can obtain without much difficulty. The style is clear and simple, an ordinary literate cultivator will, we believe, have no difficulty in understanding the instruction for increasing the efficacy of the manures now in general use and for prep ar-ing and using new ones from things which are generally to be found in villages."

श्रीः

लाख की खेती

कृषि-शास्त्र बड़ा व्यापक शास्त्र है। इसको इञ्जिनियरी, पशु-पालन-विद्या, कीट-पतंग-शास्त्र, भू-गर्भ-शास्त्र आदि कितने ही शास्त्रों और विद्यायें और सिद्धान्तों के ज्ञान का समूह कहना चाहिये। उपयोगिता के विचार से भी कृषि-शास्त्र व कृषि-विद्या का महत्व बड़ा भारी है। कृषि के उपयोगी होने में तो कोई सन्देह ही नहीं—मनुष्य-मात्र की स्थिति खेती ही पर निर्भर है। खेती का व्यवसाय भी सब से उत्तम माना गया है, कहावत है।

उत्तम खेती मध्यम बणिज, निकृष्ट चाकरी भीख समान।

परन्तु ऐसे व्यापक और महत्व-पूर्ण शास्त्र की दशा हिन्दी-संसार में बड़ी शोचनीय है। कीट-पतंग-शास्त्र में जो कृषि-शास्त्र के अन्तर्गत है इस विषय की हिन्दी भाषा में (जिसे भारत के कृषि-मात्र की भाषा कहना चाहिये) बहुत कम उत्तम पुस्तक अब तक प्रकाशित हुई हैं। इस अभाव को यह छोटी पुस्तक कदापि दूर नहीं कर सकती, इसका मुख्य उद्देश्य केवल इतना ही है कि लोगों का ध्यान कुछ इस ओर भी झुकावे जिस से इस विद्या में निपुण अनेक महानुभाव अच्छी अच्छी पुस्तकें लिख डालें और पूर्ण उपकार होना सम्भव हो जावे। अंग्रेजी भाषा में इस विषय की अनेक पुस्तकें हैं जिनका सहारा मैंने इस पुस्तक के लिखने में लिया है। और उनके रचयिता महाशयों को मैं धन्यवाद देता हूँ।

इस अभाव का विशेष कारण यह भी है कि इस देश में खेती का कार्य्य बहुधा अपढ़ दरिद्र-ग्रस्त और दुर्बल

किसानों पर छोड़ दिया गया है जो बिचारे इन सब बातों के समझने और पढ़ने में सर्वथा असमर्थ हैं। पुराने लकीर के फ़कीर हैं, जो काम उनके यहां हो रहा है वे वही कर सकते हैं उसमें अदल बदल करने की उनको कुछ भी शक्ति नहीं है। बाक़ी रहा ज़मींदारों का समूह, इनकी दशा या तो किसानों से भी गिरी है और यदि बढ़ी है तो केवल आराम कुर्सी पर लेटना और मोटर की दौड़ लगाना है। कृषि के सुधार की ओर इनका कुछ भी ध्यान नहीं है, ये केवल यह देखते हैं कि किसान की बेदखली ठीक समय पर होवै जिससे उनके अधिकार में कुछ कमी न पड़ने पावै। दूसरे प्रकार के ज़मींदार वे हैं जो दूर बैठे ज़मींदारी का प्रबन्ध नौकरों से कराते हैं। इनको भी कृषि की उन्नति वा कृषकों के सुख दुख से कुछ प्रयोजन नहीं है, ये केवल इतना देखते हैं कि पूरा मुनाफ़ा कोठी में करिन्दा ने जमा किया वा नहीं और हर साल मुनाफ़े में बेशी होती है वा नहीं। इनमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि बहुतेरे ज़मींदार ऐसे होंगे जिन्हें गेहूँ व जवा के खेत के पहिचान करने की सामर्थ्य नहीं है।

पुरानी परिपाटी से केवल धान व गेहूँ प्रभृति अनाज की खेती में किसानों का निर्वाह अब ठीक ठीक नहीं होता इसके कारण अनेक हैं अर्थात् भूमि की उपजाऊ शक्ति का कम हो जाना, सूखा पड़ना, अधिक व असमय की वृष्टि होना, पाला व पत्थर का पड़ना इत्यादि। मनुष्यों की संख्या बढ़ जाने से पहिले की अपेक्षा अब जोतने बोने की भूमि की कमी हो गई है और इस कारण लगान (कर) प्रभृति भी बढ़ गया है। अकाल व मंहगी सब के पीछे पड़ी है। इन सबसे बचने के लिये किसानों और ज़मींदारों को बहुत आवश्यक है कि वे धान, गेहूँ, जवा, बाजरा प्रभृति के अतिरिक्त और और लाभ-

दायक खेती सम्बन्धी व्यापार जैसे रेशम, शहद, लाख, कत्था प्रभृति का सहारा लेवें। इससे उनको यह लाभ होगा कि छुट्टी के समय अर्थात् उस समय में जब कि उनको खेत की जुताई व सिंचाई प्रभृत का काम हलका रहैगा वे इस कार्य्य की ओर ध्यान दे सकेंगे और इससे जो कुछ प्राप्त होगी उसमें खेत के लगान प्रभृति देकर फिर उनके घर जो अनाज पैदा होगा उससे वे अपना पेट सुखसे भर सकेंगे।

किसान रेशम के कीड़े पाल कर उनसे लाभ उठा सकते है। हिन्दुस्तान में रेशम के कीड़े चार प्रकार के हैं पर उनमें से वे जो शहतूत की पत्तियां खाते हैं और वे जो रेंडी की पत्तियां खाते हैं बहुत प्रसिद्ध है। यद्यपि हर एक स्थान में यह व्यपार लाभ व सुगमता के साथ नहीं हो सकता पर तौ भी यदि हर एक किसान थोड़ा २ ध्यान इस ओर देकर कुछ कीड़ों को पाल कर उनसे रेशम निकालने का यत्न करें तो इसमें सन्देह नहीं कि इन सबको लाभ अवश्य हो और देश में रेशम बहुत हो जाय। आसाम और कुछ कुछ पञ्जाब में इसका व्यपार अधिक है पर और प्रान्तों में बहुत कम या बिलकुल नहीं है।

कीट-पतंग-सम्बन्धी दूसरा व्यापार शहद की मक्खियों के पालने का है। किसान इन मक्खियों को पाल कर शहद और मोम इकट्ठा कर सकते हैं। कीट-पतंग शास्त्र में दक्ष होने के कारण योरप तथा अमेरिका के किसानों ने मक्खियों के रहन सहन को इस प्रकार समझ लिया है कि बिना इन मक्खियों को हानि पहुंचाने के भी वे शहद और मोम इकट्ठा कर लेते हैं। हिन्दुस्तान में तो जंगली मक्खियों के छत्ते से मधु (शहद) निकाला जाता है और उनके छत्ते नष्ट करके मोम गला लेते हैं। शहद देने वाली मक्खियां रूप रंग तथा आकार के भेद से तीन प्रकार

की होती हैं जो अपना छत्ता पेड़ों पर तथा पहाड़ों पर लगाती हैं। पर विलायत वाले किसान ऐसा नहीं करते, वे लोग मक्खियों को पालते हैं और जब उनके छत्ते में शहद और मोम इकट्ठा होजाता है तब वे मक्खियों को उठाकर दूसरे छत्ते में कर देते हैं और शहद तथा मोम ले लेते हैं। शहद और मोम के व्यापार को उन्नति देने के हेतु यहाँ भी पालतू मक्खियां रक्खी जा सकती हैं जिनसे किसान कुछ लाभ उठा सकते हैं। यह व्यापार किसी देश में ऐसा नहीं है कि कोई मनुष्य बिना प्रयत्न किये व बिना मेहनत किये घर बैठे हुक्म चलाकर शहद और मोम इकट्ठा करके एक दम धनी हो सके। परन्तु ऐसे किसान जिनको साल में १० या १५ रुपये की अधिक आमदनी १० या १५ असर्फी के तुल्य है यह व्यापार अवश्य लाभ दायक कहा जा सकता है। इस कार्य्य को आरम्भ करने के लिये किसानों को चाहिए कि पहिले थोड़ा २ याने एक या दो छत्ते लगावें और जब उनको इस कार्य्य में कुछ प्रवीणता हो जाय तो अधिक छत्ते लगा सकते हैं। गाँव पीछे दस पाँच किसान भी इस काम को करना आरम्भ कर देंय तो इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान के खर्च से बहुत अधिक शहद व मोम यहां इकट्ठा हो सकता है।

इसी प्रकार छोटे छोटे किसानों के साध्य और लाभदायक लाख की भी खेती है।

ईश्वर की सृष्टि में कोई जन्तु व जीव निष्प्रयोजन नहीं है यदि विचार किया जाय तो मालूम होगा कि जितने प्रकार के कीट पतंग हैं सब से लोक का कितना उपकार होता है। देखो "लाख" (लाह) से संसार में कितना काम होता है। इसे सोनार गहनों में भरता है। मनिहार चूड़ी बनाता है तलवार में मुठिया इसी से जोड़ी जाती है, मोहर इसी लाख

से लगाई जाती है और बच्चों के लिये गोली और गोट्टे भी लाह से बनाये जाते हैं। रंगसाजों को भी लाख की आवश्यकता होती है। कोंहार लाख लगा कर मिट्टी के बरतनों को आचार प्रभृति रखने योग्य बना देता है जिसे लोग अमृतबान कहते हैं। विलायत के लोग इसी लाख से ग्रामोफ़ोन की चूड़ियां और तरह तरह के खिलौने बनाते हैं। लकड़ी तथा धातु की वस्तुओं पर लगाने को पालिश (वारनिश) तथा छापने की स्याही प्रभृति में इसका प्रयोग बहुत होता है। यह लाख हमको कीड़ों ही से मिलती है। जिस प्रकार रेशम के कीड़े और शहद की मक्खियों से लोगों का उपकार होता है उसी प्रकार लाख के कीड़ों से भी उपकार होता है।

हिन्दुस्तान में लाख की खेती बहुत प्राचीन समय से होती आई है परन्तु इन दिनों में इसकी दशा कुछ हीन हो गई है। लाख का वर्णन महाभारत इत्यादि हिन्दुओं के प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। महाभारत का लाक्षा भवन इसी लाख का बना था— संस्कृत में लाक्ष तरु पलाश वृक्ष का पर्य्याय शब्द भी माना गया है। मुसलमानों के राज्य के समय की "आइन अकबरी" में भी लाख का वर्णन मिलता है।

लाख का मूल्य आज तक बाजार में बहुधा घटता बढ़ता रहता है परन्तु इस पर भी किसानों को इससे सदा लाभ ही होगा किसी प्रकार की घटी होने का सम्भव नहीं है कारण यह कि न तो इसका बीज मँहगा है और न इसके हेतु कोई बहु मूल्य वाली वस्तु के संग्रह करने की आवश्यकता है। बीज वाली टेरियों की गड्डियाँ रुपया सवा रुपया में मिल सकती हैं जो इस व्यवसाय को आरम्भ करने के लिए बस होगा। इसके सिवाय थोड़ी सी सुतरी वा सन और दो एक

लम्बे फलवाले बड़े छूरे, एक साधारण हंसिया तथा दो चार बाँस की डलिये से सम्पूर्ण कार्य का निर्वाह हो सकता है।

लाख एक प्रकार का रस है जिसे कीड़े वृक्षों के नरम डालियों का रस पान करके उन्हीं रस से बनाते हैं। लाख के कीड़े बहुत छोटे होते हैं स्वयम् बहुत से वृक्षों पर फैले हुए दिखाई देते हैं परन्तु विशेष कर कुसुम, पलाश, बेर, झरबेर, पीपर, शिरीश, गूलर व बबूल आदि वृक्षों की नरम डालियों पर बसते हैं और डालियों में सूक्ष्म छेद करके उनके रस को पान करते हैं जो रस उनके शरीर से फिर निकल कर झोंझ बन जाता है इसी झोँझ से लाख निकलती है। कहीं कहीं आम और लीची के वृक्षों पर भी ये कीड़े दिखाई देते हैं। अरहर के वृक्ष छोटे होते हैं पर इन पर भी लाख के कीड़े भली भांति फैलते हैं और लाख अच्छी निकलती है। अरहर की फसल की तो हानि इससे अवश्य होती है पर यदि अच्छी लाख लग जाय तो अरहर की अपेक्षा इससे बहुत अधिक धन लाभ हो सकता है।

जिन वृक्षों के नाम ऊपर लिख आये हैं उनमें से लाख की खेती के लिये कुसुम का पेड़ बहुत अच्छा है क्योंकि इस वृक्ष पर की लाख उत्तम और भारी होती है। पर खेद यह है कि यह वृक्ष सब जगह नहीं होता केवल मध्य प्रान्त तथा बङ्गाल में यह वृक्ष बहुत दिखाई देता है।

पलाश वृक्ष—टेसू, ढांक, छिउरा, छयूल आदि इस वृक्ष के अनेक नाम हैं—हिन्दुस्तान के उत्तरीय तथा मध्य भाग में यह वृक्ष बहुतायत से होता है। निकम्मी तथा ऊसर आदि भूमि में भी यह खूब होता है। बहुत कम किसान ऐसे होंगे जिन के पास दो चार पलास वृक्ष न हो—इस कारण इस वृक्ष में लाख लगाना सब से सुगम है। पलास पर की लाख

भी कुसुम के वृक्ष पर की लाख से कुछ ही उतर करके होती है। पलाश की लाख में एक प्रकार का रंग रहता है इस कारण इस को रंगीली लाह भी कहते हैं। पलास वृक्ष छटाई करने से और जल्दी बढ़ता है और नई डालियां निकलती हैं जिन पर लाख के कीड़े बहुत फैलते हैं। कटी हुई लकड़ियां जलाने के काम में आती हैं।

बैर व झरबैर जिसे बेर बेरी, व बौरी भी कहते हैं परती व ऊसर भूमि में अच्छी तरह हो सकता है—इसकी कलम (छटाई) करने से नई और मुलायम डालियाँ अति शीघ्र फैलने लगती है और इन नरम डालियों पर लाख के कीड़े खूब फैलते हैं। इन वृक्षों के लगाने से इनका फल भी खाने को मिलैगा और लाख की खेती अच्छी हो सकेगी दिहातों में बैर के फल से गरीबों का बड़ा काम चलता है! गरीब और भूखों का पेट इससे भरता है—कहावत है "भूँखे बैर अघाने गाड़ा।

पीपर या पीपल का वृक्ष हिन्दुस्तान के प्रायः सभी प्रान्तों में होता है इसे देव वृक्ष भी कहते हैं। इस वृक्ष के प्रत्येक अँश बड़े उपयोगी हैं आयुर्वेद में भी इसकी बड़ी प्रशंसा किया है। इसे लोग परलोक का साधक भी कहते हैं, लौकिक अर्थ भी इससे सिद्ध होता है अर्थात् इस पर लाख भी स्वयं बहुत लगती है। एक बार लाख की डालियां निकाल लेने से दो वर्ष बाद यह वृक्ष नया बीज संचारण करने योग्य फिर हो जाता है। परन्तु पीपर की लाख बहुत अच्छी नहीं होती इसमें कुछ पीला पन रहता है इस कारण इसकी लाख को बहुधा पलाश की लाख में मिला देते हैं।

शीरीश व सरस वृक्ष बहुधा सड़कों पर छाया के लिये लगाया जाता है। इस पेड़ की डालियां बहुत नरम होती हैं इस कारण इन पर भी लाख के कीड़े बैठाये जाते हैं।

गूलर का वृक्ष भी जहां कहीं हो उसमें लाख के कीड़े संचारण करने से अच्छी लाख निकलती है। इस वृक्ष की डालियां भी नरम और लसदार होती हैं। एकबार लाख निकाल लेने से दो बरस में यह वृक्ष फिर लाख लगाने योग्य हो जाता है। इस वृक्ष का फल भी खाया जाता है।

बबूल या बबुर जिसको, कीकर और बाबला भी कहते हैं— यह वृक्ष नदी नाले तथा तालाब के किनारे और परती ज़मीन में स्वयम् और बहुतायत से होता है। इसकी लकड़ी से कत्था भी तय्यार होता है। ईंधन के लिये इस लकड़ी को बहुत अच्छा समझते हैं—कहीं २ इन वृक्षों में भी लाख के कीड़े लगाये जाते हैं परन्तु उत्तरीय हिन्दुस्तान के सब स्थानों में इस वृक्ष पर लाख नहीं लगती।

लाख के कीड़े दो प्रकार के होते हैं एक तो वे जिनके झोंझ मोटे होते हैं और दूसरे वे जिनके झोंझ पतले होते हैं मोटे झोंझ वाले कीड़े का पालना निःसन्देह अधिक लाभकारी होगा। क्योंकि उनमें लाख अधिक निकलेगी। कहीं कहीं लाख के कीड़े पेड़ों पर स्वयम् स्वाभाविक रीति से पाये जाते हैं वही देश लाख की खेती के लिये बहुत अच्छा होता है परन्तु और स्थानों में भी इसकी खेती लाभ के साथ होती है पर ऐसे देश में लाख की खेती करनेवाले को चाहिए कि चौथे पांचवें बरस बीज को उसी जगह से लावे जहां कीड़े स्वयम् होते हैं। लाख का बीज देश देशान्तर से लाकर लगाने से बहुत अच्छा होता है। पेड़ की डालियों में से लाही निकालते समय कुछ लाल रंग का रस दिखाई देवे तो जानना चाहिये कि उसमें अभी जीते हुए अंडे बने हैं। उन डालियों को बीज के वास्ते अलग रख लेना चाहिये।

नये पेड़ों में लाख के संचारण करने के दो समय होते हैं अर्थात् महीना जेठ और अगहन का। जेठ के महीने में बीज संचारण करने से लाही अगहन के महीने में डालियों से निकलती है और अगहन या पूस में बीज के संचारण से जेठ के महीने में लाही निकालने योग्य हो जाती है। पर ज़हां पहले पहल लाख की खेती करना आरम्भ किया जाय वहां बीज का संचारण अगहन के महीने से आरंभ करना अच्छा होता है क्योंकि जेठ में बीज के संचारण करने में बहुधा आषढ़ की अधिक वर्षा से डालियों पर से लाख के कीड़े बह जाते हैं और हानि होती है। जहां बरसात हलकी होती है उस देश में लाख के बीज का संचारण जेठ के महीने में भी करने से हानि नहीं होती है। जिस देश में अधिक वर्षा व अधिक शीत पड़ती हो उस देश में लाख की खेती न करना चाहिए क्योंकि वर्षा से लाख के कीड़े डालियों पर से बह जाते हैं और अधिक सर्दी से मर जाते हैं और किसानों का परिश्रम नष्ट होता है। कभी कभी अधिक गर्मी पड़ने से लाख के कीड़ों के झोंफ बहने लगते हैं और कीड़ों के हवा मिलने का छेद बन्द हो जाता है कीड़े भीतर दम घुट कर मर जाते हैं। इसलिये लाख की खेती केवल ऐसी जगह करना चाहिए ज़हां वर्षा व शीत दोनों साधारण होती हो, और गरमी भी बहुत कड़ी न पड़ती हो। लाख की खेती आरंभ करने वालों को चाहिए कि पहिले पहल थोड़े पेड़ों में लाख लगाकर अनुभव कर लेवें कि उनका देश लाख की खेती के योग्य है वा नहीं। अनुभव करने के समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि कीड़े कई एक भिन्न स्थान से मंगाकर लगावें क्योंकि बहुधा ऐसा होता है कि कोई जाति के कीड़े उस देश की जल वायु को न सह कर मर जाते हैं और कोई जाति के ऐसे होते हैं जिनके स्वभाव के

अनुसार वहां की जल-वायु होने से बहुत बढ़ते और फैलते हैं। किसी विशेष स्थान के जल और वायु का प्रभाव लाख की खेती पर बहुत होता है। यही कारण है कि हर एक देश में लाख की खेती नहीं हो सकती। लाख की खेती का सब से अधिक प्रचार मध्य प्रान्त में है। यहां कुसुम औ पलास के वृक्ष बहुत होते हैं इस कारण लाख के खेत में भी सुगमता है। इससे कम बंगाँल में लाख की खेती है यहां कुसुम और पलास के अतिरिक्त बेर के पेड़ों में भी लाख के कीड़े लगाये जाते हैं। आसाम के भी कई एक ज़िलों में इसका कार्य्य अधिक होता है। पञ्जाब देश में लाख की खेती का प्रचार जहां तहां सर्वत्र दिखाई देता है। इस देस में खेतों के मेंड़ पर तथा परती भूमि में बैर के पेड़ इस कार्य्य के लिये लगाये जाते हैं। यहां कीकर, शिरिश, व पीपल के पेड़ में भी लाख दिखाई देती है। सिन्ध हैदराबाद प्रभृति स्थानों में बड़, शिरिश व बबूल में लाख लगाई जाती है। संयुक्त प्रान्त में और प्रान्तों की अपेक्षा लाख की खेती बहुत कम है पर जहां कहीं इसकी खेती होती है वहां कुसुम, पलास, पीपल, बैर, पाकर, गूलर व बरगद के वृक्षों में लाख लगाई जाती है।

ऊपर कह आये हैं कि लाह निकालते समय डालियों में लाल रंग का रस दिखाई पड़ें तो जान लेना चाहिये कि इसमें जीते हुये अंडे हैं। उस डाल को बीज के वास्ते अलग कर लेना चाहिये। बीज संचारण के वास्ते इन डालियों के टुकड़े १० या १२ इञ्च के कर लिये जाते हैं और कुछ घास में इन टुकड़ों को लपेट कर पेड़ की डालियों में बाँध देते हैं और जब उसमें से कीड़े निकल कर पेड़ की डालियों में फैल जाते हैं तब ये टुकड़े फिर खोल लिये जाते हैं और इनमें से लाख निकाल ली जाती है। अरहर के पेड़ों में लाख लगाने के लिये

बीज वाले टुकड़े केवल ६ इञ्च के होने चाहिये। कहीं कहीं की परिपाटी है कि बीज के टुकड़े एक एक करके नये पेड़ों की डालियों में बांधे जाते हैं और कहीं कहीं सिकहर या सूत की बिनी हुई जालीदार थैलियों में रखकर डालियों पर लटका दिये जाते हैं। कहीं कहीं पर किसान लोग बीज के लकड़ी को दो तीन या चार डालियों में इस तरह बांध देते हैं कि ये लकड़ियां डालियों से होकर उनके दोनों सिरे आखरी डालियों से मिल जाते हैं। थोड़े ही दिनों के बाद इन टुकड़ों में से लाल रंग के कीड़े रेंग कर नरम डालियों पर फैल जांयगे और लाही बनाने लगेंगे। जिस पेड़ की छटाई साल में की गई हो उस वृक्ष में बीज संचारण के लगभग २० दिन के अनन्तर बीज वाली लकड़ी निकालने योग्य हो जाती है परन्तु उस समय भी यदि उनमें लाही के कीड़े चलते हुये दिखाई पड़े तो उन टुकड़ों को फिर दूसरे पेड़ में बीज के वास्ते बांध देना चाहिये। किसानों को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि यदि कीड़े जल्दी रेंगने लगें तो जैसा अवसर हो ४,५ अथवा ७ या ८ दिन के बाद ही बीज की लकड़ी उस जगह से निकाल कर दूसरी जगह बांध देंय। बीज वाला एक फुट का टुकड़ा नये पेड़ की दस दस फुट वाली डाली के वास्ते बस होता है— जब कभी बीज के लिये डालियों को मोल लेना हो तो फुट फुट भर वाले ५० टुकड़ों की गड्डी रुपया सवा रुपया में मिल जावेगी। कभी कभी बहुत तेज़ी होने से कुछ अधिक दाम भी देना पड़ता है।

नये वृक्षों के सब डालियों में जब कीड़े खूब रेंगने लगें तो समझना चाहिये कि बीज का संचारण भली भांति हुआ है और लाख की फसल भी अच्छी होगी। कीड़े कम दिखाई

देंय तो समझना चाहिये कि फसल अच्छी नहीं उतरैगी अर्थात् लाही कम होगा।

लाख की खेती के लिये प्रथम आवश्यक कार्य्य (बीज आरोपण करने के पहिले) पेड़ को इसके खेती के योग्य बनाने का है। अर्थात् पेड़ों की अवस्था ऐसी बनानी चाहिये जिससे कीड़ों को रस खींचने में सुगमता हो, पुराने वृक्षों की कठिन डालियों में से रस कठिनाई से निकलता है इस कारण उसमें कीड़े ठीक से नहीं फैल सकते इसलिए उचित है कि जिन वृक्षों में लाख के कीड़े लगाना हो उनकी कुछ छटाई कर देवैं जिस से उनमें नई और मुलायम डालियां निकल आवें। नई डालियों में कीड़े अधिक फैलते हैं। यदि जेठ के महिने में बीज लगाना है तो पेड़ों को माघ के महीने में कलम कर देना चाहिये और यदि अगहन मे बीज सञ्चारण करना होवे तो वैशाख य जेठ के महीने में कलम करना चाहिये। कलम करने के थोड़े ही दिन के बाद बेर के पेड़ में नई शाखायें निकल आती हैं परन्तु बेर के पेड़ों की छटाई करने के समय इस बात का ध्यान रखना भी आवश्यक है कि उनकी कलम उस समय होना चाहिये जब कि उन में रस का संचालन कम होता हो। छटाई करने या काटने के लिये तीव्र और भारी कुल्हाड़ियों की आवश्यकता होती है कारण यह कि चोट ऐसी लगना चाहिये जिससे डालियां साफ कटें और छिछड़े न निकलने पांवें। अच्छी तरह छटाई (कलम) करने से नई डालियां जल्दी निकलती हैं। बलवान तथा वह पेड़ जो होनहार हो उसकी छटाई कम करना चाहिये परन्तु पुराने वृक्षों को तो भली भांति छेदन कर देना ही होता है नये पेड़ फिर से निकलते हैं। कुसुम और पलास के वृक्षों को इतनी अधिक छटाई करने की आवश्यकता नहीं होती ? पर जहां कहीं किसी पेड़ में घाव या खोंडर

दिखाई दे तो उस डाली को अवश्य काट देना चाहिये अथवा उस घाव में गोबर तथा धूना प्रभृति भर देना चाहिये। पेड़ों के छटाई करने की आवश्यकता लाख की खेती आरम्भ करने में केवल पहले बार होती है फिर तो लाही की डालियां काटने से वृक्षों के पुरानी डालियों का छेदन स्वयम हो जाता है और दूसरी फ़सल के बीज संचारण करने के समय तक न्यूतन कोमल डालियां निकल आती हैं यही हेतु है कि एक पेड़ में साल में एक ही फ़सल लाही की हो सकती है और पीपल के वृक्ष में तो एक फ़सल कटने के बाद दो तीन बरस तक इसके बीज का आरोपण नहीं हो सकता क्योंकि पीपल के वृक्ष को नई डालियां शीघ्र नहीं निकलतीं। इस कारण पीपल के पेड़ में बीज का सचारण जल्दी जल्दी नहीं किया जा सकता।

इसके अतिरिक्त जिन पेड़ों पर लाही के कीड़े लगाये जाते हैं उनकी रक्षा भी भली भांति करना चाहिये अर्थात् उनको चींटी व दीमक प्रभृति से बहुत बचाना चाहिये क्योंकि ये जन्तु पेड़ों पर चढ़ कर लाख के कीड़ों को खा जाते हैं। इन से रक्षा की सरल उपाय यह है कि पेड़ों के नीचे की भूमि कई बार जोती जाय और उस में उत्तम प्रकार की खाद प्रभृति का प्रयोग कर दिया जाय और अदरख, हलदी, गाजर व घुइयां (अरुई) अथवा दूसरी कोई वस्तु जो छाये में हो सकती है बोई जावैं। इससे पेड़ों में भी खाद पहुंच कर तेज़ी बनी रहैगी। लाही खूब निकल सकेंगी और एक दूसरी फ़सल भी तय्यार हो जायगी।

लाख की खेती करने वालों को इन कीड़ों का भी कुछ हाल जनाने की आवश्यकता है। जिस पेड़ में लाख लगी हो उसकी एक डाल को हाथ में लेने से मालूम होगा कि उस पर

बहुत से गोल गोल दाने आपस में मिले हुये दिखाई देते हैं यही दाने लाख के मादी कीड़े हैं जो पहिले डालों पर फैलते हैं फिर उनके रस को चूस कर अपने शरीर से लाख निकाल कर वहीं बस रहते हैं। यह गोल दाने धीरे धीरे बढ़ते हैं और जब इन में की मादा भली भांति बढ़ जाती है तो इन से बच्चे निकल कर दूसरे नरम डालियों पर जा बसते हैं और इसी प्रकार वे भी लाख बनाना आरम्भ कर देते हैं। बच्चे साल में दो बार निकलते हैं। बच्चे के निकलने का समय हर एक स्थान में एक ही नहीं है — देश देश की ऋतु तथा कीड़ों के जाति के भेद से बच्चों के निकलने का समय भी भिन्न भिन्न है। हर एक देश में भी कोई तिथि या दिन इस के लिये स्थिर नहीं है। जब बच्चे निकलने लगते हैं तो करीब १॥ या २ महीने में कुल बच्चे निकल आते हैं। इसी प्रकार भिन्न २ वृक्षों पर के कीड़ों के भी भिन्न २ समय बच्चे निकलने का है। बच्चा लाल रंग का है बहुत छोटा होता है इसके चलने को तीन जोड़ अर्थात् ६ पांव होते हैं काली काली दो आँख और सिखर और दुम की ओर दो दो बारीक बाल होते हैं। छोटे बच्चे आरम्भ में बड़े चैतन्य मालुम होते हैं। और निकलने के साथ ही इधर उधर नरम डालियों के खोज में रेंगने लगते हैं और जहां कहीं उनके अनुकूल स्थान मिल जाता है वहीं बस जाते हैं। चींटियां प्रभृति की तरह ये कीड़े भी इकट्ठा रहना चाहते हैं।

प्रथम अवस्था में नर और मादे देखने में एक ही प्रकार के रहते है परन्तु दूसरी अवस्था में इनका भेद प्रकट होने लगता है। मादा पेड़ ही पर रह जाती है और उसका रूप कोई विशेष प्रकार परिवर्त्तन नहीं होता और अन्त में वह शिथिल और लाचार हो जाती है। नर का

रूप बढ़ता जाता है और थोड़े दिन बाद वह दो पर वाला एक लाल रंग की तितली बन जाता है। बाज़े नर के पर नहीं निकलते जिन्हे देखकर धोखा इस बात का हो सकता है कि ये नये बच्चे हैं परन्तु इस धोखा से बचने के लिये ध्यान रखना चाहिये कि बच्चे बहुत छोटे होते हैं उनके शरीर के सम्पूर्ण अंग स्पष्ट नहीं रहते और बेपर वाले नर आकार में कम से कम दूने होते हैं और उनके शरीर के कुल अवयव स्पष्ट हो जाते हैं और टाँगें मज़बूत हो जाती हैं।

पूसा अग्रीकलचरल रिर्च इन्सटीट्यूट के बुलिटिन नं० २८ में सी० एस० मिश्र महाशय ने बेपंख वाले नर और बच्चों के ठीक रीति से पहचानने के लिये नीचे लिखे हुये भेद लिखे हैं :—

बच्चों की पहचान	बेपख वाले नर की पहचान
१—१/२५ इञ्च लम्बे	१—१/१२ इञ्च लंबे
२—दो काली आँखें	२—दो काली विभाजित आँखें
३—सिर पर दो बाल जिनमें आठ आठ पोढ़ होते हैं और पाँचवें पोढ़ के अंत में दो बारीक बाल होते हैं	३—सिर पर दो बाल जिनमें आठ सोठ पोढ़ बराबर के होते हैं और प्रत्येक पोढ़ में महीन बाल होते हैं
४—शरीर के आठों भाग स्पष्ट नहीं होते	४—शरीर के आठ भाग स्पष्ट हो जाते हैं
५—टांगें पतली	५—टांगें [illegible]टी

६—शरीर के पिछले हिस्से की नली पतली	६—शरीर के पिछले हिस्से की नली बलवान
७—दुम के जगह दो छोटे बाल	७—दुम की जगह दो मज़बूत बाल

मादी की अपेक्षा नर की गणना बहुत कम होती है अर्थात् ५००० मादी में एक या दो नर होता है। नर जब खूब बढ़ जाता है तो उसके पर निकल आते हैं और जोड़ा खाने के बाद उड़ जाता है और मर जाता है इसके अन्तर मादी डालियों से खूब रस चूसने लगती है और शरीर से लाख अधिक निकालती है। मादी अपने ढक्कन के भीतर बढ़ती जाती है और उनका ढक्कन भी मोटा हो जाता है और बढ़ता जाता है। इसी समय में अंडे देना भी आरम्भ कर देती है इसी अवस्था में मादी के शरीर से एक प्रकार का रस भी निकालता है जो पेड़ों के डालियों पर पत्तों में गिरकर जम जाता है और इसी अवस्था में इस के साँस लेने वाला बाल भी बढ़ जाता है जिससे अकसर डालियाँ जिनपर ये कीड़े रहते हैं सफ़ेद दिखाई देने लगती हैं जिस समय यह सफ़ेदी खूब दिखाई देय तो समझना चाहिये कि लाख अच्छी लगी है और फ़सल अच्छी होगी। जब कभी अधिक धूप प्रभृति से फ़सल ख़राब हो जाती है और भोंभ के सूराख बन्द हो जाते हैं तब यह सफ़ेदी नहीं दिखाई देती और यही पहिचान फ़सल के ख़राब हो जाने की होती है। जब मादी अपने प्रत्येक अंडों को चारों ओर से लाख से ढंक देती है और अंडा देने का व्यापार समाप्त होजाता है तब मादा के शरीर से लाल रस पैदा हो जाता है जो बच्चों को दूधका काम देता है। यही अवस्था बीज के लिये छड़ियाँ काट लेने की होती हैं। लाख के बच्चे निकलने के १० या १२ दिन पहिले बीहन के

टुकड़ों को काट कर किसी हवादार स्थान में रख देना होता है और जब अंडों से कीड़े निकलना आरम्भ हो जाता है तब बीज संचारण किया जाता है अंडे जब कीड़े हो जाते हैं तब वे अपने माताओं के शेष अंश को भक्षण कर लेते हैं और फिर जिस वृक्ष में संचारण किये जाते हैं उसकी डालियों पर रेंगने लगते हैं।

बहुधा लोगों का ख्याल है कि जिस पेड़ पर लाही लग जाती है, वह पेड़ नष्ट हो जाता है, और मर जाता है, इसमें सन्देह नहीं कि यह बात कुछ ठीक है पर यदि सावधानी से काम लिया जाय तो इतनी हानि नहीं हो सकती। किसानों को चाहिये कि लाख का बोहन लगाते समय इस बात का ध्यान अवश्य रक्खें कि किसी एक डाली पर बहुत कीड़े न फैलने पावें, कम से कम आधी डाली खाली रखना चाहिये। इसके साधन का रसल उपाय यही है कि किसान बीज संचारण के बाद खूब देख भाल करता रहे और जब आधी डाली तक लाल रंग फैल जाय तो बीज की लड़की शीघ्र निकाल लेवे। ऐसा करने से कीड़ों को आहार के लिये डालियों से रस यथेष्ट मिलेगा और वृक्ष भी नष्ट न होगा।

लाख की खेती में किसानों को दो ही काम करना पड़ता है एक तो बीज संचारण के लिये पेड़ों की छटाई प्रभृति और बीज संचारण करना और दूसरा कार्य्य पेड़ों पर से लाख लगी हुई डालियों का इकट्ठा कर लेना। इसके उपरान्त मनिहार अथवा कोई और व्यापारी इन लाहों को मोल ले लेते हैं।

अब देखना चाहिये कि किसानों का कितना समय और धन इस कार्य्य में लगता है और इससे उनको कितनी आय हो सकती है। यदि मान लिया जाय कि किसी किसान को

२० पेड़ में लाख की काश्त करना है तो उसको १० पेड़ की छटाई और १० पेड़ में बीज संचारण के फरवरी के महीने में लग भग १५ दिन और इसी प्रकार १० पेड़ की छटाई और १० पेड़ में बीज आरोपण करने में जून के महीने में १५ दिन कुल ३० दिन सावकाश के समय के और प्रथमवार बीज मोल लेने में, वृक्षों के छोटाई बड़ाई के हिसाब से १० वृक्षों के लिये २५) से लेकर ४०) रु० तक इसके बदले २० वृक्षों में यदि अच्छी फ़सल तय्यार हुई तो कम से कम ६०) की लाख निकलेगी। पीपर आदि बड़े २ वृक्षों में लाख लगाने से प्रत्येक वृक्ष में ५) से लेकर १०) तक की लाख निकलती है।

एक पेड़ में १० सेर से लेकर मन भर तक लाही जैसा छोटा या बड़ा पेड़ हो निकल सकती है । लाख के कारखाने वालों डालियों में खुरची हुई लाही या डालियों को खरीद लेते हैं ।

जैसे गेहूँ, सरसों प्रभृति में गेरुई व मांहुं आदि शूक्ष्म कीड़े लग कर फ़सल को हानि पहुँचाते हैं उस प्रकार लाख के भी अनेक शत्रु हैं। पहिले चीटियाँ, यह लाख की भारी शत्रु है। जब लाख की मादी कीड़ों के के शरीर से रस निकलने लगती है तब उनकी चाटने के लिये चीटियाँ बहुत रेंगती हैं जिससे कि कीड़ों के सांस लेने वाले सुफ़ेद बाल जो झोझ के छिद्रों से बाहर निकले रहते हैं टूट जाते हैं और कीड़े दम घुट कर भीतर मर जाते हैं। इनसे रक्षा करने के लिये सरल उपाय यह है कि वृक्षों के तनों मे कोई दुर्गंध वाली तथा चपकने वाली चीज़ जैसे तारपीन का तेल, चूना, प्रभृति पोत देवें तो चीटियों का चढ़ना उतरना बन्द होजावेगा।

दूसरे शत्रु तितिलियाँ हैं। ये कई प्रकार के जन्तु विशेष हैं, इनमें दो तीन जाति की तितिलियाँ तो ऐसी हैं जो लाह लगे

हुए वृक्षों पर अंडा देती हैं। जिनमें से कीड़े निकल कर लाह के कीड़ों को भक्षण कर लेते हैं और कई प्रकार के ऐसी हैं जो बोरों में इकट्ठी किये हुये लाख में भी जाकर अंडा देती हैं और लाख को नष्ट कर देती हैं। पहिली प्रकार के तितलियों से रक्षा करने की सरल उपाय यह है कि जब पेड़ों पर इनके कीड़ों के सुफेद झोंक दिखाई पड़ें तो उन्हें साफ़ कर दें य और दूसरे प्रकार की तितिलियों से रक्षा के लिये लाख को बोरों में भरने के पहिले पानी से धो लेना या धूप से सुखा लेना चाहियें।

इनके सिवाय छोटे २ जन्तु जो बहुधा वृक्षों पर रेंगते दिखाई देते हैं लाख के कीड़ों के शत्रु हो जाते हैं। इनको भी वृक्षों पर से झाड़ कर धूना प्रभ्रिति का प्रयोग करना चाहिये।

जिस प्रकार पके हुये खेतों को लोग चुरा कर काट लेते, हैं उसी प्रकार लाख की फ़सल के चोर बहुत हो जाते हैं और इनसे रक्षा के लिये रखवाली की आवश्यकता है।

लाख के किसानों को विशेष ध्यान इस बात पर देना चाहिये कि जिस पेड़ में लाख लगी हो उसकी कुल डालियों को एक दम न काट देंय वृक्षों पर कुछ लाह अवश्य छोड़ देंय जो आगे चल कर बीज का काम देवें। दूसरे यह कि ४ या ५ साल के बाद लाख के बीज दूसरे २ स्थान से मंगा कर लगावें तथा एक जाति के वृक्ष पर की लाख दूसरे जाति के वृक्ष पर लगावें।

मनिहार या लाख के व्यापारी लाख की लकड़ियों को मोल ले लेते हैं और उनमें से लाख छील लेते हैं। लाख छीलने के लिये पीतल या लोहे की पटरियां या साधारण चाकू काम दे सकते हैं—बैर की लाख कुछ कड़ी होती है उसे खुरचने के लिये तेज़ चाकू की आवश्यकता होती है।

कुसुम और पलास के वृक्षों की लाख को केवल हाथों से ऐंठ देने ही से लाख बड़ी सुगमता से अलग हो जाती है। कहीं कहीं कूट कर भो लाख अलग की जाती हैं पर ऐसा करने में ध्यान यह रखना चाहिये कि लाख चूर न होने पावे। डालियों पर से लाही खुरचने के बाद ही उसे न तो धूप में सुखाना चाहिये और न बोरों में भर कर रख देना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से एक तो रंग भरे दाने सिकुड़ जाते हैं और फिर धोने में कठिनाई होती है और दूसरे बोरों में गर्मी से ममस कर ढेले बन जाते हैं इसलिये उनको दर कर फिर सुपञ्जना में उसे चाल लेना होता है जिससे उसमें की हलकी चीज़ गर्द वगैरह अलग हो जावे और लाही का चूरा जो भारी होता है वह अलग हो जावे। इस चूरा को साफ पानी में डाल देते हैं और कई बार पानी बदल बदल बरतनों में पसाने से लाख अलग हो जाती है। लाही के रंग का पानी नादों में इकट्ठा किया जाता है जहां रंग नीचे जम जाता है। लाही के चूरे को साफ़ पानी में धोने के समय उसे बांस की गझिन बुनी हुई छिटनियों में रखकर पानी में चूरे को हाथ से खूब दरते हैं जिससे चूरे से रंग वाला अंश बिलकुल निकल जाता है।

लाही का रंगदार पानी रूई में सुखाकर महाउर बनाते हैं इसी महाउर से व्याहशादी तथा अन्यान्य उत्सव के समय स्त्रियां पांव को रंगती है इसके अतिरिक्त इसका रंग और सब काम में कपड़े प्रभृति रंगने के लिये और छींट तथा लिहाफ प्रभृति छापने के लिये छीपी और रंगरेज़ बराबर काम में लाते-थे परन्तु धीरे २ विलायती रंगों के फैल जाने से इसका व्यवहार बिलकुल जाता रहा है। इस रंगदार पानी को किसान पांस की जगह खेत में डालें तो बड़ा उपकार हो सकता है।

इस रंग में अंडी आदि रेशम का कपड़ा रंगा जा सकता है। यदि सूती कपड़ा रंगना हो तो पहिले थोड़ा ठंडा पानी लेकर उसमें कुछ फिटकरी छोड़ दे और उसी पानी में कपड़े को पछाड़ कर सुखा लेय, फिर आध पाव साफ लाख लेकर खूब महीन पीस ले और तीन पाव पानी मिला कर आंच में उबाले पानी लाल रंग का हो जावैगा—तब हांडी आंच पर से उतार रंग को ठंडा करके छान लेना चाहिये जिसमें कपड़ा छोड़ कर फिर गर्म करने से कपड़े पर बहुत अच्छा लाल रंग आ जावैगा। उस कपड़े को निकाल कई बार ठंडे पानी में कुछ खटाई मिला कर धोने से रंगीन कपड़ा तय्यार हो सकता है।

बड़े बड़े कारखानों में जहां हजारों मन लाख नित्य प्रति धोई जाती हैं वहां बड़े २ हौज़ पत्थरों के बनाये जाते हैं (जिस में नीचे एक सूराख भी रहता है) इसमें १२ या २० सेर लाख भिगोई जाती है और पानी में २४ घंटे तक फूलती रहती है। फिर लाख धोने वाले कुली इन हौजों में उतर कर पांव से खूब कुचलते हैं और सूराख का डट्टा खोल देते हैं तो पानी के साथ लाख बाहर चलनियों पर जो वहां पर रक्खा रहता हैं गिरती है पानी छन कर अलग गढहे में चला जाता है लाख उठा कर फिर हौज़ में डाल कर पूर्ववत पांव से कुचल कर फिर धोई जाती है यह व्यापार सात या आठ बार कभी कभी और अधिक बार करने से लाख साफ हो जाती है जिसकी पहचान यह है कि फिर उसमें से रंग नहीं निकलता है। लाख के धोने में क्या समय लगैगा यह कुलियों के अभ्यास पर निरभर है। एक कुली एक दिन में १५ सेर से लेकर १॥ मन तक लाख धो सकता है।

रंगदार पानी गढहे में इकट्ठा होता है वहां वह थिराया जाता है और जब रंग नीचे जम जाता है तब सावधानी से

पानी ऊपर खींच लेते है नीचे रंग रह जाता है।

धुला हुआ चूरा सूख जाने पर कच्ची लाख होकर बिकता है। इस हालत में लाख की रंगत सुनहरी होती है। इस लाख में राल (Resin) मिला देने से उत्तम लाख जिसे चपरा की लाख कहते हैं तय्यार होती है।

लाख बनाने की विधि ये है कि राल को पीस कर पछोर लेना होता है और लाही के चूरे के प्रत्येक शत भाग में ५ भाग मिलाकर कुल चूरे को किसी मोटे लंकलाट वगैरह कपड़े की लम्बी थैली में भर देना होता है। उस थैली का एक सिरा किसी स्तम्भ में बांध कर और नीचे आग जलाकर दूसरे सिरे को पकड़ कर खूब मुरी देना होता है। इससे लाही का चूरा गल कर थैली के ऊपर छन आता है। फिर उसे किसी कमची या पीतल वगैरह की पट्टी से थैली के ऊपर से खुरच कर अलग रख लेते हैं यही शुद्ध लाख होती है। लाख निकालने की जो लम्बी थैली बनाई जाती है वह अपने आधीन है जितनी बड़ी थैली की ज़रूरत हो उतनी लम्बी याने ५ हाथ या ६ हाथ या २५ हाथ तक की थैली बना सकते हैं। यह लाख हल्के सुनहले रंग की होता है। इसमें हरताल मिलाने से रंग और खुल जाता है। बर्तनों में रख कर इसको फिर गलाते है। उसमें से थोड़ा थोड़ा निकाल अपनी इच्छानुसार इसमें रंग देकर खूब कूटते हैं। चाहे लाल, हरा, नीला पीला व स्याह और रंग इसमें मिला सकते हैं और कूटने से रङ्ग खूब सम्मिलित हो जाता है। रंग देने के बाद लाख की लकड़ियां, बत्तियां, बना ली जाती है। जो मोहर वगैरह छापने के काम में आती है। लाख की बत्ती बनाने के वास्ते किसी प्रकार का चिकना पत्थर होरसा प्रभृति अच्छा होता है जिस पर पौथन लगा कर लाख को

बत्ती बना लेते हैं। लाख को रंग देने में कुछ विशेष खर्च नहीं हैं। थोड़े ही रंग मिलाने से लाख का रंग सुहावना हो जाता है।

बहुत कम गांव ऐसे होंगे जहां कुछ न कुछ परती न हो। यह परती बहुधा पशुओं के खड़े होने और चरने के लिये छोड़ दी जाती थी-परन्तु लोलुप ज़मीन्दार और काश्तकार धीरे २ इन परतियों को तोड़ते जाते हैं और फल यह होता है कि गांव में पशुओं के चरने के लिये उचित भूमि नहीं रह जाती जिस से उनको बड़ा क्लेश होता है। परन्तु यदि परती भूमि जोती न जाय और उसमें ऐसे वृक्ष जिन पर लाख लग सकती है, लगाये जांय तो किसानों और ज़मींदारों को अवश्य वही लाभ उन परतियों से लाख के द्वारा हो सकता है जो जोतने से होगा और पशुओं के ठहरने की जगह बनी रहेगी। कुछ परती ऐसी होती है जहां खेती का होना असम्भव होता है परन्तु उसमें खूल आदि वृक्ष अच्छी भांति बढ़ सकते हैं ऐसे स्थानों को भी लाह की खेती के लिये चुन लेना चाहिये। इसका फल यह होगा कि उस भूमि से जहां से कुछ प्राप्ति न होती थी वहां से "लाख" और इंधन की लकड़ी यथेष्ट मिलैगी।

अब किसानों को मालूम होगा कि "लाख की खेती" कैसी सुखसाध्य है। इसमें कोई कठिनाई नहीं है और एकबार कार्य्य आरम्भ हो जाने पर बीज प्रभृति की भी सुगमता हो जावैगी। जिन देशों में लाख की काश्त बहुतायत से होगी वहां किसानों को लाख से धोने प्रभृति का श्रम भी नहीं उठाना होगा। पेड़ों पर की लगी लाख के भी खरीदार दूर पर इकट्ठे हो जांयगे।

डाक्टर गिलवर्ट जे· फाउलर साहब लाख की खेती के सम्बन्ध में लिखते हैं कि लाख और चपड़े पर जो उत्तम रिपोर्ट मैसर्स लिन्डसे और हारलो ने सन् १६२१ में प्रकाशित की थी, उसमें अधिकतर लाख के उद्योग के ख़याली और फर्ज़ी-वर्ण पर जोर दिया गया है। वास्तव में लाख की फ़सल का कोई ठीक अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि इसकी खेती उन लोगों के हाथ में है, जिनको इस उद्योग के सम्बन्ध की कोई शिक्षा नहीं मिली, इसलिये इसकी खेती को हर प्रकार के ख़तरों का सामना रहता है। जैसे कभी फ़िजूल घास फूस लाख के दरख़्तों के आस पास उग आता है, और उनकी गिज़ा को जमीन से स्वयं खींच कर दरख़्तों का नाश कर देता है, कभी आंधी से या वर्षा के अभाव से नुक़सान पहुंच जाता है, और कभी २ तो होशियारी के साथ क़लम न लगने के कारण सारी की सारी फ़सल का नाश हो जाता है। अक्सर यह होता है कि समय के पहिले ही लाख को क़लम कर लिया जाता है, जिसका फल यह होता है कि दूसरी सफ़ल के समय वह पेड़ ही बेकार हो जाते हैं। लाख की पैदाइश के बारे में ऐसे अविश्वास के कारण लंदन में तय्यार शुदः चपड़े का क़ाफी स्टाक रक्खा जाता है, और हिन्दुस्तान की तय्यार शुदः लाख के भाव पर इसका उल्टा असर पड़ता है। बहुधा यह भय रहता है कि जब तक क़ीमती लाख से चपड़ा तय्यार किया जाय तब तक चपड़े का दाम ही गिर जाय और इस प्रकार उसकी तय्यारी में जो लाभ की आशा थी वह मारी जाय। इस कारण डाक्टर गिलवर्ट जे. फ़ाउलर साहब की सम्मति है कि उद्योग में स्थिरता उत्पन्न करने के लिये लाख की खेती वैज्ञानिक तरीके पर की जाय। गत वर्षों में भारतीय वैज्ञानिक इन्स्टीट्यूट बंगलोर

के बायोकैमिस्ट्री—विभाग में विषय की बहुत कुछ जांच पड़ताल हुई है, जिससे यह सिद्ध हुआ है कि अब काश्त की अन्य वस्तुओं के सदृश लाख की खेती भी भरोसे के साथ की जा सकती है ।

"इति"